08/05/2020

अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
इंटरमीडिएट, द्वितीय वर्ष (वाणिज्य एवं कला)
विषय - 'हिन्दी कोर' (गद्य भाग)
पाठ का नाम - श्रम-विभाजन और जाति प्रथा
लेखक - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर)

प्रश्न॰ 1 श्रम - विभाजन और जाति-प्रथा रचना के रचनाकार कौन हैं?
उत्तर - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर।

प्रश्न॰ 1 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म कब हुआ था?
उत्तर - 14 अप्रैल 1891 ई॰ को।

प्रश्न॰ 1 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर - मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान पर।

प्रश्न॰ 1 भारतीय संविधान के निर्माता कौन हैं?
उत्तर - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर।

प्रश्न॰ 1 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का निधन कब हुआ?
उत्तर - सन् 1956 ई॰ को।

(दीर्घउत्तरी प्रश्नोत्तर)

प्रश्न- जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर- जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं-

(i) जाति-प्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी करती है।

(ii) सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है।

(iii) भारत की जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता। वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार करके जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है।

(iv) जाति-प्रथा मनुष्य को विपरित परिस्थितियों में पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। फलतः भूखे मरने की नौबत आ जाती है।

प्रश्न- जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोज़गारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती रही है। भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बाँध दिया जाता था। इस निर्णय

मे व्यक्ति की रुचि, योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं, इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त, संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही जोर देता था। उद्योग-धंधों की विकास प्रक्रिया व तकनीक के कारण कुछ व्यवसायी रोजगारहीन हो जाते थे। अतः यदि वह व्यवसाय न बदला जाए तो बेरोज़गारी बढ़ती है।

आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून, सामाजिक सुधार व विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति-प्रथा के बंधन काफी ढीले हुए हैं, परंतु समाप्त नहीं हुए हैं। आज लोग अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे हैं।

प्रश्न.7 लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है? समझाइए।

उत्तर – लेखक के मत से 'दासता' से अभिप्राय केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा है – किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ है – उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

प्रश्न.7 शारीरिक वंश- परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर - शारीरिक वंश - परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएं। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि उत्तम व्यवहार के हक में उच्च वर्ग बाज़ी मार ले जाएगा। अतः सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न.7 सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन - सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर— हम लेखक की बात से सहमत हैं। उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन - सुविधाओं का तर्क दिया है। भावनात्मक

समता तभी आ सकता है जब समान भौतिक स्थितियाँ व जीवन-सुविधाएँ उपलब्ध होगी। समाज में जाति-प्रथा का उन्मुलन समता का भाव होने से ही हो सकता है। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। शहर में कान्वेंट स्कूल व सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के बीच स्पर्धा में कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी ही जीतेगा। क्योंकि उसे अच्छी सुविधाएँ मिली है। अतः जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिले तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न 7 लेखक ने जाति-प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया है?

उत्तर- लेखक ने जाति-प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है-

(i) यह श्रमिक-विभाजन भी करती है।

(ii) यह श्रमिकों में ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।

(iii) यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।

(iv) यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो।

(v) यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।

(vi) जाति-प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रुचि नहीं लेता।